एरिक इरिक्सन का मनोसामाजिक सिद्धांत

डॉ. प्रगति दुबे
सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर
(छ. ग.)

मनोसमाजिक सिद्धांत के प्रतिपादक के रूप में एरिक एरिक्सन का महत्वपूर्ण स्थान है।1902 में जर्मनी में जन्मे एरिक्सन मनोवैज्ञनिक थे। एरिक्सन ने अपने सिद्धांत को फोयड के मनोलैंगिक सिद्धांत के विकासात्मक अवस्थाओ के विस्तार के रूप में प्रस्तुत किया। एरिक्सन ने अपने सिद्धांत में विकासात्मक अवस्थाओ में सामाजिक कारको को महत्व देते हुए सिद्धांत को प्रतिपादित किया। एरिक्सन के अनुसार विभिन्न् विकासात्मक अवस्थाओ के नियत कारको में स्थिरता और स्थायित्व में भिन्नता पाई जाती है।

एरिक्सन के सिद्धांत का केंद्रीय बिन्दु बालक की पहचान को समाज में स्थपित करना था। उन्होंने अपने इस सिद्धांत को 1963 में लिखी अपनी पुस्तक "चाइल्ड हुड ऐड सोसाइटी" में अपने वर्णित किया। इसे एरिक्सन के मानव विकास चक्र के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने अपने सिद्धांत में सामाजिक अनुभूतियों को अधिक महत्व दिया है। उसके अनुसार मानवीय व्यक्तित्व के विकास में पूर्णतवाद, पर्यावरणीयता, और परिवर्तनशीलता थे। तीनो तत्वो का महात्वपूर्ण स्थान होता है।

एरिक्सन के अनुसार व्यक्ति का विकास आठ चरणो में क्रमानुसार चलता है। हर चरण का एक विकासात्मक मानक होता है। जो आने वाली समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। समस्याओ का सफलता पूर्वक निराकरण बालको के उचित विकासात्मक अवस्था की ओर अग्रसर करता है। इस प्रकार व्यक्ति का विकास सामाजिक वातावरण की परस्पर अंतरक्रिया का परिणाम होता है।

एरिक्सन के मनोसामाजिक **सिद्धांत** की

अवस्थाएं

इस सिद्धांत के अनुसार बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक पहुंचने में एरिक्सन ने आठ मनोसामाजिक अवस्थाओं को दो वितरित दृष्टिकोण में लिया:-

इस सिद्धांत का प्रथम दृष्टिकोण अनुकूल शांति के रूप में प्रस्तुत किया गया । अतः इसे सिन्टोनिक (Syntonic) कहां गया एवं दूसरा दृ ष्टिकोण प्रतिकूल शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया अत: इसे Dsystonic (डाइस्टोनिक) शब्द से संबोधित किया गया। एरिक्सन के अनुसार बालक के सफल विकास के लिए दोनों प्रवृत्तियों में संतुलन आवश्यक है ।

सकारात्मक या नकारात्मक प्रवृत्तियों के एकतरफ विकास से व्यक्तित्व को संतुलित करना संभव नहीं है। उन्होंने सभी आठ मनोसामाजिक अवस्थाओं का एक क्रम बताया। जैविक परिपक्वता समाजिक ऐतिहासिक बलों की अंतक्रिया के फलस्वरुप इन अवस्थाओं में व्यक्तित्व का विकास होता है । चूंकि उनके सिद्धांतों में व्यक्तिगत चमतेवदंस सांवेगिक तथा सांस्कृ तिक तथा सामाजिक विकास को समन्वित किया गया है, अतः मनोसामाजिक सिद्धांत कहा जाता है ।

एपिजेनेटिक सिद्धांत द्वारा विकास कार्य जिसका अर्थ है - कि हमारा व्यक्तित्व एक पूर्व निर्धारित क्रम के माध्यम से विकसित होता है । अर्थात केवल एक के बाद एक चरण | अपने सिद्धांत में उन्होंने प्रस्ताव दिया कि व्यक्तित्व का यह विकास आठ चरणों में होता है, प्रत्येक चरण के माध्यम से हमारी प्रगति पिछले सभी चरणों में हमारी सफलता या असफलता की कमी को निर्धारित करती है। इस सिद्धांत को जीवन अवधि सिद्धांत भी कहा जाता है।

मनोसामाजिक गुण

प्रत्येक चरण में कुछ विकासात्मक कार्य शामिल है जो कि प्रकृति में मनोसामाजिक है और जिनकी एक निश्चित इष्टतम समय भी है यदि एक मंच का प्रबंधन अच्छी तरह से किया जाता है । तो धनात्मक प्रतिमा विकसित होती है। यदि समाधान नकारात्मक हुआ तो विकास मंदित हो जाता है ।

विश्वास बनाम अविश्वास (Trust Vs His mustrust)

(1) इरिक्सन के सिद्धांत की यह पहली अवस्था है जो जन्म से लेकर 1 साल की होती है । इरिक्सन के मनोसामाजिक अवस्थाओ का वर्णन इस प्रकार है- जो पालकों की पूर्ति व विश्वास व अविश्वास पर केंद्रित मूलभूत आवश्यकता होती है। इरिक्सन के अनुसार बालकों को अपने माता-पिता तथा परिवार का सतत् स्नेह प्यार व उचित देखभाल मिलता है इरिक्सन उन बच्चो में सर्वप्रथम धनात्मकगुण विकसित होता है । उनमें विश्वास का भाव विकसित होता है। दुसरे तरफ जिन बच्चो को माता-पिता व अन्य देखरेख करने वाले व्यक्तियों द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता है। उनमें

अविश्वास विकसित होता है और बालक में अनावश्यक डर उत्पन्न होता है । पालकों द्वारा दूसरों को प्राथमिकता देने पर बालक में हीनता ईष्या व आकांक्षा की भावना विकसित होती, जो उसमें ऋणात्मक प्रभाव डालता है, जो आगे चलकर उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं ।

इरिक्सन का मत है कि यदि बालक विश्वास व अविश्वास के द्वंद को दूर कर लेता है तब उसमें एक विशेष मनोसामाजिक शक्ति आशा का विकास होता है। आशा का तात्पर्य एक ऐसी शक्ति या समझते है जो बालक को स्वयं के अस्तित्व एवं सांस्कृतिक परिवेश को सार्थक रूप से जानने समझने की योग्यता विकसित करती है।

शिशु के स्वास्थ्य व्यक्तित्व का निर्माण इस बात पर निर्भर करता है कि उसके जिंदगी में अविश्वास के अनुपात में विश्वास की मात्रा अधिक हो । आशा है की उत्पत्ति से भविष्य में शिशु के वयस्क होने पर सामाजिक मूल्यों पर आस्था का प्रदर्शन करता है ।

स्वायत्तता बनाम **लज्जा** तथा **शक Autonomy Vs shame and doubt**

इरिक्सन के विकास कि यह अवस्था फ्रायड के गुदाअवस्था से समानता रखती है। यह मनोसामाजिक विकास की दूसरी अवस्था है जो लगभग 2 से 3 साल की उम्र की होती है । जब बच्चों को अपने माता - पिता एवं देखरेख करने वाले पर विश्वास हो जाता है तब यह भाव उत्पन्न होने लगता है और वे स्वायत्तता को महत्व देते हैं ।

इरिक्सन का यह मानना है कि यदि शैशवादस्या में बालक में विश्वास का भाव विकसित किया जाए तो उसके परिणाम स्वरूप दुसरी अवस्था में स्वतंत्रता एवं आत्मनियंत्रण जैसे शीलगुण स्वतः ही विकसित हो जाते हैं। स्वतंत्रता का तात्पर्य इस बात से है कि पालक नियंत्रण में रखकर बालक को इच्छानुसार कार्य करने का अवसर प्रदान करें। यदि बालक को स्वतंत्रता प्रदान नहीं किया जाता है तो उसके आत्महीनता, व्यर्थता, आशंका, लज्जा का भाव उत्पन्न होने लगता है । जो उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं ।

इरिक्सन के अनुसार यदि स्वायत्तता बनाम लज्जाशिलता के द्वंद को यदि सफलतापूर्वक दूर कर लिया जाता है तो बालकों में इच्छाशक्ति (Will **Power**) नामक विशिष्ट मनोसामाजिक शक्ति का विकास होता है ।

इरिक्सन के अनुसार इच्छाशक्ति एक ऐसी शक्ति है जो बालक को

अपनी रूचि के अनुसार स्वतंत्रता पूर्वक कार्य करने के लिए प्रेरित करती है । जिसमें बालक में आत्मनियंत्रण एवं आत्मसंयम का गुण विकसित होता है, और जिसके फलस्वरूप बालक शक व लज्जा की परिस्थिति में भी अपने स्वतंत्र और आत्मनियंत्रित व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं । **खेलअवस्था** - पहलशक्ति बनाम दोष **Initiative Vs Guilt**

मनोसामाजिक विकास की यह तीसरी अवस्था है । यह अवस्था 4 से 5 वर्ष तक की आयु की होती है । यह अवस्था आरंभिक बाल्यावस्था की होती है। इस उम्र तक बालक बोलना, चलना, दौड़ना इत्यादि सही ढंग से सीख लेता हैं अतः उन्हें नए-नए खेल खेलने घर व घर से बाहर स्कूल मे साथियों के साथ मिलकर नयी-नयी जिम्मेदारी को निभाने में रुचि होती है, और इस प्रकार के कार्य करने में उन्हें आनंद की प्राप्ति होती है

जब बालको में स्वायत्तता का भाव विकसित हो जाता है, तो वे अपने आसपास के वातावरण में अन्वेषण करने लगते हैं एवं नई दिखने वाली वस्तुओं को जानने की उत्सुकता दिखने लगते हैं एवं इस अवस्था में बालको में संज्ञानात्मक विकास की उथल दिखाई पड़ती है । जिसमें बालक में उत्पन्न हो रही क्षमताओं को प्रोत्साहन मिलता है। इसे पहल की संज्ञा दी गई है। इस स्थिति में उसे पहली बार इस बात का एहसास होता है कि उसके जीवन की कोई खास लक्ष्य है जिसे उसे प्राप्त करना है | माता-पिता अभिभावकों के लिए यह आवश्यक है कि वे इस समय बालकों के प्रयास की सराहना करें किंतु इसके विपरीत जब अभिभावकों द्वारा बच्चों को कार्यों में भाग लेने से रोक दिया जाता है या माता - पिता द्वारा बच्चों के प्रयास या पहल की आलोचना की जाए या दंडित किया जाता है तो बालकों में अपराध की भावना जन्म होने लगता है और बालकों में दोषभाव **Guilt** feeling उत्पन्न हो जाता है । इस प्रकार की स्थिति बालकों में निश्क्रियता की स्थिति को जन्म देती है ।

एरिक्सन का मानना है कि जब पहल का अनुपात दोषपूर्ण भाव के अनुपात से अधिक होता हैं तात्पर्य या है की दोषपूर्णभाव वे संघर्ष का समाधान सफलतापूर्वक हल लेता है। उस स्थिति में बालक को उद्देश्य नामक मनोसामाजिक गुण का विकास होता है। जो बालक में जीवन के लिए लक्ष्य निर्धारित की क्षमता यानी लक्ष्य उन्मुखी व्यवहार करने के लिए अभिप्रेरित करती है ताकि वे बिना किसी डर के सामर्थ का विकास कर सके।

स्कूल अवस्था : परिश्रम बनाम हीनता Industry vs Inferiority

मनोसमाजिक विकास की यह चौथी अवस्था है इसे उत्तर बाल्यावस्था भी कहा जाता है यह अवस्था 6 साल की उम्र से **12** वर्ष की आयु तक की होती है। यह अवस्था फ्रायड के मनोलैगिण विकस की अवस्था से समानता रखती है। इस समय बालक पहली बार स्कूल के माध्यम से औपचारिक शिक्षा ग्रहण करता है एवं बच्चों को पहल के द्वारा विभिन्न प्रकार की अनुभूतियों प्राप्त होती है और यह अनुभव उसमें एक ऊर्जा का संचार करती है जो उन्हें नए ज्ञान अर्जित करने एवं बौद्धिक कौशल को सिखाना प्रारंभ करने में मदद करती है। इस अवस्था में बालक आसपास के लोगों, साथियों के साथ बातचीत करना किस प्रकार व्यवहार करना सिखाता है। यहां पर बालक अपनी प्राप्त सफलता एवं पहचान विकसित होन से उत्साहित होता है और इसी पहल को परिश्रम की संज्ञा दी गई है।

चूंकि इस समय बालक अपना अधिकतर समय शिक्षकों तथा साथियों के साथ ऊर्जा के साथ व्यतीत करते हैं अतः उनका प्रभाव महत्वपूर्ण होता है एवं यदि किसी कारणवश छात्रों के सामने चुनौतियों का सामना करने **में** असफलता प्राप्त होने पर या किसी कारणवश स्वयं की क्षमता में संदेह की स्थिति बालक में आत्महीनता की भावना को विकसित करती है। ठीक इसी तरह यदि छात्र द्वारा किसी सुक्ष्मकार्य की सफलता पर उसे परिश्रम का भाव विकसित नहीं हो

पाता है, उसके स्वास्थ्य व्यक्तित्व के विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

वाइल्लान्ट तथा वाइल्लान्ट के विकास के क्षेत्र में किए गए अध्ययन से पाया गया कि परिश्रम एक मात्र ऐसा माध्यम है जो बालक के व्यक्तिगत समायोजन आर्थिक सफलता तथा व्यक्तिगत संबंधों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अर्थात परिणाम उत्साहवर्धक है इस बात की ओर इंगित करते हैं कि शिक्षक छात्रों को समस्याओं से निपटाने में मदद करते हैं जिससे बालक चुनौतियों से आसानी से निपट सके ।

जो छात्र इन समस्याओं चुनौतियों से सफलतापूर्वक समाधान ढूंढ रहते हैं। उनमें एक विशेष मनोसामाजिक गुण विकसित होता है जिसे सामर्थ्यता की संज्ञा दी गई है। सामर्थ्यता का अर्थ किसी कार्य को पूरा करने मे शारीरिक मानसिक क्षमताओं का समुचित उपयोग |

किशोरावस्था : **अहं पहचान बनाम** भूमिका **संभ्रान्ति Identity Vs Roleconfusion**

यह इरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत की पांचवी अवस्था है। जिसकी अवधि **12** से **18** वर्ष की होती है । इस अवस्था में किशोरों में दो प्रकार के मनोसामाजिक गुण विकसित होते हैं। प्रथम यह कि इस अवस्था

। में किशोरों में यह जानने की जिज्ञासा होती है कि वे कौन है, उनकी जिंदगी में वे कहां तक सफल हो रहे हैं। इसे इरिक्सन ने अहं पहचान की संज्ञा दी। यह एक धनात्मक पहलू है । किशोरों को अपने जीवन में बहुत सी भूमिकाओं का निर्वाहन करना पड़ता है। किशोरों को भिन्न-भिन्न दिशाओं व राहों का अन्वेक्षण कर एक स्वास्थ्य पहचान बनाए रखना पड़ता है। ताकि वह

एक व्यस्क की तरह भूमिका निभा सके। यदि किशोर द्वारा भी यह भिन्न-भिन्न दिशाओं के अन्वेषण का कार्य सही ढंग से नहीं हो पाता है तब वे अपने भविष्य के लिए कोई निश्चित रास्ता नहीं चुन पाते हैं । यह स्थिति किशोर में पहचान के संभ्राति (confusion) की स्थिति उत्पन्न करती है। जब वे पहचान व संभ्रांति के संकट के उचित समाधान ढूंढ लेते हैं । उसी स्थिति में एक विशेष मनोसामाजिक गुण उत्पन्न होता है । जिसे कर्तव्यपरायणता (Fidelity) का नाम दिया गया है। इस गुण के कारण किशोर समाज के आदर्शा- नियमों के अनुरूप अपना व्यवहार प्रदर्शित करता है।

घनिष्ठता **बनाम अलगाव (Intimacy Vs Isolation)**

यह इरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत की छठी अवस्था है जिसकी अवधि 20 से 30 वर्ष की होती है। यह वयस्कावस्था का आरंभिक काल होता है। यह वह अवस्था है जब व्यक्ति दूसरों से घनिष्ठता बढ़ाता है । एवं इस समय व्यक्ति का दूसरे व्यक्तियों से धनात्मक संबंध बनता है । इस अवस्था में व्यक्ति स्वतंत्र रूप से जीविकोपार्जन प्रारंभ करता है तथा समाज के सदस्य अपने माता- पिता भाई बहनों व अन्य लोगों से अच्छे संबंध स्थापित करता है। साथ ही इस समय वह स्वयं से भी उचित संबंध स्थापित करता है अर्थात वह अपने को पूर्ण रूप से समझने लगता है और दूसरों के लिए अपने आप को समर्पित कर देता है । इस अवस्था में यदि व्यक्ति दूसरों के साथ घनिष्ठता विकसित नहीं करता है और स्वयं में खोया रहता है तो वे सामाजिक रूप से अलग हो जाते हैं। इसे अलगाव कहा जाता है । उनके लिए अकेलापन की जिंदगी साये के समान हो जाती है । और ऐसे व्यक्ति अन्र्तव्यैक्तिक संबंध बनाते भी हैं तो वे सतही व खोखले होते हैं । और इस तरह से इस अवस्था में घनिष्ठता बनाम

अलगाव का संघर्ष प्रमुख संकट होता है । ऐसे व्यक्ति जिनमें अलगाव की मात्रा बढ़ जाती है उनमे कार्य व व्यवसाय के प्रति निरसता की भावना बढ़ जाती है । एवं व्यक्ति में गैर सामाजिक व्यवहार प्रबल होने लगता है और व्यक्ति जब घनिष्ठ बनाम अलगाव से उत्पन्न संघर्ष का सफलतापूर्वक सही समाधान ढूंढ लेता है तो प्यार (स्नेह) स्वअम नामक मनोसामाजिक शक्ति की उत्पत्ति होती है जो किसी संबंध में दूसरों से वादा करने और उस संबंध को बनाए रखने में समर्पण की क्षमता से सम्बद्ध होती है। जो उसमें ईमानदारी, वफादारी दूसरों के प्रति आदर उत्तरदायित्व आदि गुणों को विकसित करती **है**। इसके विपरित घनिष्ठता व अलगाव के संघर्ष के समाधान में असमर्थता व्यक्ति मे सांवेगिक अस्थिरता व उत्तरदायित्व निर्वाहन करने में असमर्थता को प्रदर्शित करती है ।

जननात्मक बनाम **अस्थिरता** (Generativity Vs Stag- nation)

इरिक्सन द्वारा प्रतिपादित मनोसामाजिक सिद्धांत की यह सातवीं अवस्था है। तथा यहां 30 से 50 की आयु तक चलती है। इसे मध्यव्यस्कावस्था भी कहा जाता हैं। इस अवस्था का मुख्य लक्षण व्यक्ति में जननात्मकता के भाव का उत्पन्न होना है । जननात्मक को अर्थ नई पीढ़ी को कुछ धनात्मक वस्तु, विचारधाराएं हस्तांतरित करने से होता है । इस अवस्था का मुख्य उद्देश्य अगली पीढ़ी को विकास में सहायता प्रदान करने से संबंधित होता है। यह भाव व्यक्ति में सकारात्मक दृष्टिकोण के रूप में उत्पन्न होता है । और आने वाली पीढ़ी व समाज की उन्नति बनाने की चिंता करता है। इस तरह हम कह सकते हैं कि जननात्मकता में सर्जनात्मकता व उत्पादता का भाव छुपा होता है। समाज का ऐसा वर्ग जो युवाओं की उचित शिक्षा एवं भविष्य की

वास्तविक चिंता देखते हैं । वे जननात्मक के सटीक उदाहरण है ।

|

जब व्यक्ति मे जननात्मकता का भाव विकसित नहीं होता है, तो उसमें अस्थिरता उत्पन्न हो जाती है । और व्यक्ति सिर्फ स्वयं के वैयस्तिक सुख-सुविधा के लिए परेशान रहते हैं । इससे ऐसे व्यक्तियों में यह भाव उत्पन्न होता है कि वे आने वाली पीढ़ी को कुछ नहीं कर पा रहे हैं और यह असमर्थता का भाव है । जिसमें व्यक्ति आत्म-तल्लीनता की स्थिति में होता है। जिसमें व्यक्ति की सुख-सुविधा, व्यक्तिगत आवश्यताँए सर्वोपरि होती है। जब व्यक्ति इस अस्थिरता यानी जननात्मक बनाम स्थिरता की समस्या का समाधान उचित तरह से कर लेते हैं तो उसमें एक मनोसामाजिक शक्ति उत्पन्न होती है। इरिक्सन के अनुसार यह शक्ति व्यक्ति में कल्याण की चिंता का भाव विकसित होता है । इसे एरिक्सन ने देखभाल की संज्ञा दी है।

संपूर्णता बना निराशा Integrity Vs Despair

इरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत की यह अंतिम अवस्था है । जिसमें लगभग 60 वर्ष से ऊपर से लेकर मृत्यु तक की अवधि आती है । इस अवस्था को हर संस्कृति में वृद्धावस्था कहा जाता है । इस अवस्था में व्यक्ति को विभिन्न प्रकार की शारीरिक व समायोजन संबंधी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस अवस्था में व्यक्ति का ध्यान विशेषकर

भूतकाल की सफलताओं व असफलताओं की ओर अधिक होती है। उनका ध्यान भविष्य से हट जाता है ।

एरिक्सन का मत है कि इस अवस्था में कोई मनोसामाजिक संकट उत्पन्न नहीं होता है। व्यक्ति अपने पिछले समय का मूल्यांकन घनात्मक ढंग से करता है तात्पर्य यह है । तात्पर्यय कि सफलताओं का अधिक व असफलताओं को कम अनुभव करता है । जिसमें उसमें संपूर्णता का भाव उत्पन्न होता है। जिससे उसमें अहंपूर्णता के भाव के कारण वे अपनी जिंदगी को धनात्मक रूप से पूर्ण समझते हैं। इस अवस्था में व्यक्ति को स्वयं का अस्तित्व दिखाई देता है । एवं उन्हें मृत्यु का भय नहीं होता है । परंतु यदि वे अपनी जिंदगी का उपलब्धियों का मूल्यांकन ऋणात्मक रूप में करते हैं, तो उनमें नैराश्यचिता का भाव उत्पन्न होता है । वे स्वयं को निर्धन व असहाय समझते हैं। इस अवस्था में व्यक्ति को बुद्धिमता का व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त होता है। जब इस ज्ञान के आधार पर व्यक्ति संपूर्णता बनाम निराशा के संकट को दूर कर लेता **है**। तो उनमें परिपक्वता जैसी मनोसामाजिक शक्ति विकसित होती है। जो व्यक्ति में संपूर्णता की भावना का अनुभव कराती है । इरिक्सन के अनुसार यह ऐसी अवस्था है । जिनमें व्यक्ति में परिपक्वता के सही मायने उत्पन्न होती है ।

इरिक्सन का मनोसामाजिक विकास सिद्धांत व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक मनोसामाजिक घटनाओं का समन्वय है । इस सिद्धांत का उचित मूल्यांकन करते हुए कहा जा सकता है कि इरिक्सन का सिद्धांत जिंदगी की सांवेगिक सामाजिक कार्यों के महत्व की ओर ध्यान केंद्रित करता है । एवं **इन** कार्यों उचित व्याख्या विकासात्मक फ्रेमवर्क में करता **है** । इरिक्सन द्वारा प्रतिपादित पहचान समप्रत्यय को शिक्षा में काफी महत्व प्रदान किया गया है । एवं उनके सिद्धांत में बताया गया है कि किस तरह जैविक परिपक्वता तथा सामाजिक माँग के बीच समन्वय स्थापित कर जीवन को उद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है।

इरिक्सन के गुणात्मकपूर्ण सिद्धांत होने के साथ ही कुछ आलोचनाओं भी गई है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इसे जरूरत से ज्यादा कठोर व सक्त माना है एवं कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि यह सिद्धांत पूर्णतः वैज्ञानिक

नहीं है।

इरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत का शैक्षिक महत्व

इरिक्सन के मनोसामाजिक सिद्धांत शिक्षकों व शिक्षार्थियों के लिए महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है-

1. इरिक्सन के सिद्धांत में छोटे बच्चों में पहल को बढ़ावा देने पर बल दिया गया है। उनके अनुसार इस हेतु आरंभिक शिक्षा कार्यक्रमों में वातावरण इस प्रकार निर्मित किया जाए कि बालक को अन्वेषण के पर्याप्त अवसर मिले इस कार्य के लिए उन्हें उनकी रूचि के कार्य, खिलौने प्रदान की जाए, जिससे उनमें कल्पना शक्ति का विकास हो इससे बालक के सांवेगिक विकास के साथ - साथ संज्ञानात्मक विकास भी उपयुक्त माध्यम द्वारा पर्याप्त मात्रा में होता है। बच्चों को चिंता तथा दोष भाव से मुक्त करने हेतु शिक्षकों व पालकों को चाहिए कि वे बालकों की आलोचना कम करें । ताकि उनमें आत्मविश्वास का विकास हो ।

2. बच्चों को पारिश्रमी बनना शिक्षकों की जिम्मेदारी होती है । अतः प्राथमिक शाला के शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वे बालकों में परिश्रम की आदत का निर्माण करे। ताकि वे चुनौतियों का सामना कर सके प्राथमिक स्कूल में बच्चों की जिज्ञासु प्रकृति होती है । ऐसे समय में बालक को अभिप्रेरित करने का दायित्व शिक्षकों का होता है ।

3. किशोरावस्था में बालक की पहचान बहुआयामी होती है एवं उन पहचान के लिए उत्तेजित होता **है** । किशोरों में व्यावसायिक लक्षण बौद्धिक विकास खेलकूद, संगीत, शौक आदि सम्मिलित होते हैं । इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक विभिन्न गतिविधियों द्वारा यह

जानने का प्रयास करें कि वह अपनी जिंदगी में क्या बनना चाहते हैं। ऐसे क्रियाओं से किशोरों में आत्माअन्वेषण की प्रवृत्ति का विकास होगा।

4. इरिक्सन के सिद्धांत की विभिन्न अवस्थाओं के माध्यम से शिक्षकों को आत्ममंथन करना चाहिए कि वह अपने जीवन-वृति में कहां तक सफल हुए हैं। ऐसी क्रियाओं से उनमें पहचान व घनिष्ठता का भाव स्वयं विकसित होगा। जिससे दूसरे भी प्रेरित होकर ऐसा भाव उत्पन्न करने की क्षमता का विकास करेगें।

5. इरिक्सन का सिद्धांत शिक्षकों को इस बात के लिए प्रेरित करता है। शिक्षकों के अपने छात्रों पर विश्वास करना चाहिए वे शिक्षको को संदेश देते है कि पहल दिखलाते है, मेहनती व सामर्थ्यता के मॉडल के रूप में कार्य कर व भावी पीढ़ी को तैयार करने में सार्थक योगदान प्रदान कर सकते है।

संदर्भ ग्रंथ :-

सिंह आर.एन. 2018 आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा

लाल जे.एन. 2018 आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान,अग्रवाल पब्लिकेशन्स आगरा

सिंह राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल, जितेंद्र एवं सिंह राजेंद्र 2009 विकासान्मक मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी

सिंह अरूण कुमार **2021** मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी

Dxon R.A. and **Larner** R. **M. (**1999) History and system in **developmental** psychology. **Developmental** psychology. An **advanced** textbook **(ed**. **M.H.** psychology Bornstein and M.E. **lamb) 4th edn**. Pp 1-46. **Mahwah**, **N.I. Lawrence erbium**.

Geary D.C. **and Bjarklund** D.F. (2000**) Evolutionary** developmental

psychology and **development 71(1), 57-65**

Lerner R.M. (1998**) Theories of** human development. **Contemporary perspectives**. **Handbook of** child **psychology**. Vol**-1**. **Theoretical models of** human **development (**ed. R.M. **Lerner)** 5th edn**. Pp. 1-24 new** York **wiley**

Lerner **R.M.,** fisher **(B.** and Weinberg R. A. **(2000)**. **Toward a science for** and of the people. **Promoting civil society through the** application **of** developmental **science**. **Child development 71 (1) 11-20**

Levis M.D. **(2000)**. **The promise of dynamic systems approaches for an integrated account of human** development. Child **development 71(1), 36-43**

Nelson C.A. and bloom **F.E. (1997)**. **Child development** and **neuroscience,** child **development** 68**(5)**, **970-987 Pevegrini** A.D. **and Bjorkund** DF **(1998)**. **applied child study.** A **developmental approach**, **3rd** edu, **243pp**. **Mahwah**, NJ. **Lawrence Erlbaum**.

Tandon**, RK (2002**). **Child psychology. APH publishing corporation**.